अध्याय 25

बिललद का तीसरा भाषण

अध्याय 25 में बिलदद ने परमेश्वर की तुलना पवित्र स्वभाव और मनुष्य के नीच और अपवित्र स्वभाव के साथ की।

''क्या मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहर सकता है?'' (25:1-6)

[1]तब शूही बिलदद ने कहा, [2]''प्रभुता करना और भय मनवाना यह उसी का काम है; वह अपने ऊँचे ऊँचे स्थानों में शान्ति रखता है। [3]क्या उसकी सेनाओं की गिनती हो सकती है? कौन है जिस पर उसका प्रकाश नहीं पड़ता? [4]फिर मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी कैसे ठहर सकता है? जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है वह कैसे निर्मल हो सकता है? [5]देख, उसकी दृष्टि में चन्द्रमा भी अन्धेरा ठहरता, और तारे भी निर्मल नहीं ठहरते। [6]फिर मनुष्य की क्या गिनती जो कीड़ा है, और आदमी कहाँ रहा जो केंचुआ है!''

आयतें 1-3. बिलदद ने अपने संक्षिप्त भाषण का आरम्भ परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए किया। **प्रभुता** (*mashal, माशाल*) ''शासन करने की क्षमता'' है।[1] **भय** (*pachad, पाचाड*) इस मामले में ''खौफ'' या ''डर''[2] है न कि भक्ति। **शांति** (*shalom, शालोम*) ''पूर्णता'' या ''सम्पूर्णता'' है।

परमेश्वर के शासन करने में किसी बात की कोई कमी नहीं है। अपने आदेश को मनवाने के लिए उसके पास सब स्वर्गीय सेनाओं की व्यवस्था है। उसके सब लोग **उसका प्रकाश** लेकर लाभान्वित होते हैं।

आयतें 4-6. बिलदद ने मनुष्यजाति का बहुत निचला विचार पेश किया। निश्चय ही बिना परमेश्वर के अनुग्रह के कोई भी **परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी** या **निर्मल** नहीं ठहर सकता। परन्तु सब लोगों को **कीड़ा** या **केंचुआ** कह देना उस मर्यादा से मेल नहीं खाता जो परमेश्वर के स्वरूप में बनाए जाने के कारण हमें मिली है (उत्पत्ति 1:27)। सेमुएल कॉक्स ने विचार दिया है:

> एक जीव जो कारण और विवेक रखने वाला और धार्मिकता और प्रेम के योग्य हो, बहुत से कीड़ों से ही नहीं बल्कि बहुत से संसारों से भी बढ़कर है। और इस कारण यदि हम अपनी आदत के अनुसार बिलदद के शब्दों का इस्तेमाल करके उनका इस्तेमाल सर्वशक्तिमान की दृष्टि में मनुष्य के वास्तविक स्वभाव और स्थान को तय करने के लिए करते हैं, तो हम बड़े भारी और भयानक पाप के दोषी हैं।[3]

प्रासंगिकता

''तो फिर मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी कैसे बन सकता है?'' (अध्याय 25)

अध्याय 25 में बिलदद ने परमेश्वर के स्वभाव की जबर्दस्त तस्वीर बनाई। उसने स्वर्गीय

सेनाओं पर परमेश्वर के राज को दिखाते हुए उसके सर्वशक्तिमान होने पर ज़ोर दिया (25:2, 3)। फिर बिलदद ने एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा: ''तो फिर मनुष्य परमेश्वर के सामने धर्मी कैसे बन सकता है?'' (25:4; NIV)। यदि परमेश्वर इतना सामर्थी और पवित्र है तो निर्बल और पापी मनुष्य उसके साथ कैसे सम्बन्ध रख सकते हैं? उसकी उपस्थिति में जाना भी कैसे सम्भव हो सकता है? मनुष्य को ''केंचुआ'' और ''कीड़ा'' कहकर बिलदद ने अपने भाषण को समाप्त किया (25:6)। यह संक्षिप्त अध्याय बाइबल के अन्य वचनों के लिए उछालतख्ते (आगे बढ़ने की प्रेरणा देने) का काम करता है, जिनसे हमारे लिए तीन नाजुक मुद्दे स्पष्ट होते हैं।

मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि का मुकुट है। जीवन के निम्न रूपों में से आने के विपरीत, जिसका आधुनिक विकासवाद की शिक्षा देने वाले लोग दावा करते हैं, हमें सबसे समझदार और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के द्वारा सृजा गया था, जो हम से प्रेम करता है। उत्पत्ति की पुस्तक का विवरण में सृष्टि के इस भाग को छटवें दिन बताया गया है:

> फिर परमेश्वर ने कहा, ''हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें'' (उत्पत्ति 1:26)।

कुछ प्रकार से हमें परमेश्वर के जैसे होने के लिए बनाया गया था। हम केवल शारीरिक ही नहीं बल्कि *आत्मिक* भी हैं यानी हमें शरीर के साथ-साथ प्राण भी दिया गया। परमेश्वर स्वयं आत्मिक जीव है (यूहन्ना 4:24)। उसने हमें सीखने और बढ़ने, सोचने और समझने, और भावनाओं के पूरे सिलसिले को महसूस करने की क्षमता भी दी। इससे भी बढ़कर परमेश्वर ने मनुष्यजाति को समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों, पृथ्वी के जीव जंतुओं और हर रेंगने वाले जीव के ऊपर अधिकार दिया। केवल पुरुष और स्त्री को उसके बना देने *के बाद* ही उसने अपनी सृष्टि को ''बहुत ही अच्छा'' घोषित किया (उत्पत्ति 1:31)।

भजन लिखने वाला दाऊद परमेश्वर की सृष्टि के भय में खड़ा हो गया। वह पुकार उठा:

> जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर [या, स्वर्गदूतों; KJV] से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है। तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है। सब भेड़-बकरी और गाय-बैल और जितने वनपशु हैं, आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियां, और जितने जीव-जन्तु समुद्रों में चलते फिरते हैं। हे यहोवा, हे हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है (भजन संहिता 8:3-9)।

पाप ने हमारी कीमत घटा दी है। दूसरे लोगों के द्वारा अपने साथ दुर्व्यवहार होने के कारण हम में से कितनों को कभी लगा है कि हम कीड़े मकौड़ों के जैसे हैं? भजन संहिता 22 में जो कि मसीह से जुड़ा भजन है, धर्मी कष्ट सहने वाले ने कहा: ''परन्तु मैं तो कीड़ा हूं, मनुष्य नहीं; मनुष्य

में मेरी नाम धराई है और लोगों में मेरा अपमान होता है'' (भजन संहिता 22:6)। अपने पापों की घोरता के कारण हम में से कितनों को लगा है कि हम तो कीड़े मकौड़ों के जैसे हैं? परमेश्वर ने हमें चाहे इतने उच्चत्तम ढंग से बनाया है पर अपने पापों के द्वारा हम अपना मूल्य कम कर देते हैं।

रोमियों 3:10-18 में पौलुस ने पाप के गहरे अंधकार को दर्शाने के लिए पुराने नियम के कई हवालों को जैसे माला में इकट्ठे पिरो दिया:

> जैसा लिखा है: ''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। उनका गला खुली हुई कब्र है, उन्होंने अपनी जीभों से छल किया है, उनके होठों में सांपों का विष है। उनका मुंह श्राप और कड़वाहट से भरा है। उनके पांव लहू बहाने को फुर्तीले हैं, उनके मार्गों में नाश और क्लेश है, उन्होंने कुशल का मार्ग नहीं जाना। उनकी आंखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं।''

यदि सचमुच ऐसा में है, ''तो फिर कोई मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी कैसे ठहर सकता है?''

हम मसीह के बलिदान के द्वारा धर्मी बन सकते हैं। हमारी निराश स्थिति का वर्णन करने के बाद पौलुस ने आशा की बात बताई। उसने समझाया कि परमेश्वर किस प्रकार से लोगों को क्रूस पर अपने पुत्र के बलिदान के द्वारा धर्मी बना पाया। यह पेशकश केवल परमेश्वर के अदभुत अनुभव के द्वारा सम्भव हुई है और इसे मनुष्य के आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा अपनाना आवश्यक है (रोमियों 3:21-26)। बाद में रोमियों के नाम पत्र में आगे, पौलुस ने व्यवस्था को पूरा कर पाने की अपनी स्वयं की अयोग्यता बताई (रोमियों 7:4-23)। उसने निष्कर्ष निकाला, ''मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो'' (रोमियों 7:24, 25)। यीशु की बलिदानी मृत्यु के द्वारा ही हम परमेश्वर के सामने धर्मी ठहर सकते हैं। उसका लहू हमारे पापों की क्षमा के लिए बहाया गया। उसके पाप रहित जीवन ने उसे हमारे लिए सिद्ध बलिदान होने के योग्य बना दिया। पौलुस ने लिखा, ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को [परमेश्वर] ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' (2 कुरिन्थियों 5:21)।

सारांश। परमेश्वर के लिए हम मूल्यवान हैं। हमारे पाप चाहे अनगिनत हैं फिर भी उसने हमारे लिए यीशु मसीह के द्वारा उसके पास वापस आने का रास्ता दे दिया है। जब हम यीशु में अपना भरोसा रखते, अपने जीवन में पाप से मुड़ते, और मसीह में बपतिस्मा लेते हैं तो मसीह की मृत्यु की आशिषें हमारे खाते में जोड़ दी जाती हैं। हमें पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा का दान दिया जाता है। हमें मसीह की कलीसिया में मिला दिया जाता है। हम परमेश्वर की संतान अर्थात उसके परिवार के सदस्य बन जाते हैं। हमें उसकी दृष्टि में धर्मी बना दिया जाता है।

डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 465. [2]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी

एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 2:922. [3]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमेंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 326.